जम्मू केन्द्रीय विश्वविद्यालय

परास्नातक हिन्दी

द्वितीय सत्र परीक्षा, 2017

विषय : सगुण भक्ति काव्य

विषय कोड :PGHND2C007T

समय : तीन घंटा

पूर्णांक : 100

खण्ड (क)

बहुविकल्पीय प्रश्नः 1.5 X 10 =15

सभी प्रश्न करना अनिवार्य है:–

प्रश्न 1. 'निर्गुन कौन देस को बासी' किसकी उक्ति है?

(क) सूरदास (ख) रसखान (ग) वल्लभाचार्य (घ) रहीम

प्रश्न 2. रामचरितमानस के पहले काण्ड का नाम बताईये?

(क) अयोध्या काण्ड (ख) लंका काण्ड (ग) अरण्य काण्ड (घ) बाल काण्ड

प्रश्न 3. अष्ठछाप के कुल कवियों की संख्या कितनी है?

(क) छः (ख) आठ (ग) दस (घ) बारह

प्रश्न 4. विनयपत्रिका किसकी रचना है?

(क) कबीरदास (ख) नन्ददास (ग) चर्तुभुजदास (घ) तुलसीदास

प्रश्न 5. सूरसागर किसकी रचना है?

(क) कबीरदास (ख) सूरदास (ग) तुलसीदास (घ) नाभादास

प्रश्न 6. रामचरितमानस की भाषा कौन सी है?

(क) खिचड़ी (ख) राजस्थानी (ग) ब्रज (घ) अवधी

प्रश्न 7. मीरा किसकी अनन्य भक्त हैं?

(क) शिव (ख) राम (ग) गिरिधर गोपाल (घ) शक्ति

प्रश्न 8 . सूरदास के गुरू इनमें से कौन हैं?

(क) रामानन्द (ख) वल्लभाचार्य (ग) नरहरिदासघ (घ) रैदास

प्रश्न 9. तुलसीदास के गुरू का नाम बताईये?

(क) नरहरिदास (ख) रामानन्द (ग) वल्लभाचार्य (घ) कृष्णदास

प्रश्न 10. मीरा का स्थान इनमें से कौन सा है?

(क) जम्मू व कश्मीर (ख) राजस्थान (ग) वाराणसी (घ) सोरो

खण्ड (ख) 8 x 5 = 40

लघु उत्तरीय प्रश्न
केवल पाँच प्रश्न करना अनिवार्य है:–

इकाई–एक

प्रश्न 1. अँखियाँ हरि–दरसन की भूखी।
कैसे रहें रूपसराची ये बतियाँ सुनि रूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एती नहिं झूखी।
अब इन जोग–सँदेसन ऊधो अति अकुलानी दूखी।।
बारक वह मुख फेरि दिखाओ दुहि पय पिवत पतूखी।
सूर सिकत हटि नाव चलायो ये सरिता है सूखी।। – सप्रसंग व्याख्या

अथवा

सूर की राधा पर अपनी संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

इकाई–दो

प्रश्न 2. ऊधो! इतनी कहियो जाय।
अति कृसगात भई हैं तुम बिनु बहुत दुखारी गाय।।
जल समूह बरसत अँखियन तें हूँकत लीने नाँव।
जहाँ जहाँ गोदोहन करते ढूँढत सोइ सोइ ठाँव।।
परित पछार खाय तेहि तेहि थल अति व्याकुल ह्वै दीन।।
माँनहुँ सूर काढ़ि डारे हैं बारि मध्य तें मीन।।– सप्रसंग व्याख्या

अथवा

भ्रमरगीत सार के माध्यम से सूरदास के उक्ति वैचित्र्य पर प्रकाश डालिए?

इकाई –तीन

प्रश्न 3. बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ।।
संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु।
बालबिनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु।। –सप्रसंग व्याख्या

अथवा

तुलसी का मर्यादा भाव स्पष्ट कीजिए?

इकाई–चार

प्रश्न 4. तुरत भयउँ मैं काग तब पुनि मुनि पद सिरू नाइ।
सुमिरि राम रघुबंस मनि हरषित चलेउँ उड़ाइ।।
उमा जे राम चरन रत बिगत काम मद क्रोध।
निज प्रभुमय देखहिं जगत केहि सन करहिं बिरोध।।–सप्रसंग व्याख्या

अथवा

तुलसी की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए?

इकाई–पाँच

प्रश्न 5. आली री म्हारे णेणां बाण पड़ी।
चित्त चढ़ी म्हारे माधुरी मूरत, हिवड़ा अणी गड़ी।
कब री ठाड़ी पथ निहारां, अपने भवण खड़ी।
अटक्यां प्राण सांवरो प्यारो, जीवण मूर जड़ी।
मीरां गिरधर हाथ बिकाणी, लोग कह्यां बिगड़ी। –सप्रसंग व्याख्या

अथवा

मीरा की भक्ति भावना पर संक्षेप में प्रकाश डालिए?

खण्ड (ग)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न **15 X 3 = 45**

केवल तीन प्रश्न करना अनिवार्य है:–

प्रश्न 1. सूरदास की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 2. सूरदास के भ्रमरगीत की विशेषताएँ बताएँ?

प्रश्न 3. तुलसी के समाज दर्शन को स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 4. तुलसी के लोकमंगल की भावना को स्पष्ट कीजिए?

प्रश्न 5. मीरा के काव्य में स्त्री–मुक्ति के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।